उत्तररामचरितम्

राम का चरित्र-चित्रण

एम्.ए – II / IV सेमेस्टर

डॉ उमा शर्मा
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
एन.ए.एस (पी.जी.) कॉलेज, मेरठ

उत्तररामचरितम्

1

प्रश्न भवभूति का करुण रस या "उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते"।

उत्तररामचरित में भवभूति ने करुण रस की धारा प्रवाहित की है — उन्होंने कहा है

"एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्
भिन्नः पृथक् पृथगिवाश्रयते विवर्तान्
आवर्तबुद्बुदतरङ्गमयान् विकारा
नम्भो यथा सलिलमेव हि तत्समग्रम्"

जिस प्रकार जल अलग-2 निमित्त कारणों से आवर्त, बुद्बुद, तरंग और फेन आदि का रूप लेता है तथा अलग-2 संज्ञाओं से पुकारा जाता है परन्तु रहता अन्तत: जल ही है क्योंकि अन्तत: इन सभी का पर्यवसान जल में ही होता है और शेष जल ही बचता है। इसी प्रकार साहित्य में भी **एक ही रस करुण है** और वही निमित्त भेद से श्रृंगार, वीर, रौद्र, अद्भुत आदि रूप धारण कर विभिन्न नामों से पुकारा जाता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि महाकवि भवभूति ने काव्य-परम्परा में करुण रस को मुख्य रस के रूप में स्थापित कर एक बार पुनः आदिधारा को महर्षि

1

चरित्र - चित्रण

राम

अयोध्या के राजा के रूप में राम का चरित्र भवभूति ने अंकित किया है। वे आदर्श राजा आदर्श पति आदर्श पिता और आदर्श भ्राता जैसे सांसारिक दायित्वों का निर्वाह अपनी अप्रतिम प्रतिभा से करते हुए दीख पड़ते हैं। उनकी व्यथा भीतर ही भीतर पुटपाक के सदृश पकाती रहती है। उनकी राजगद्दी सँभालते ही यह प्रतिज्ञा उनके प्रजापालक रूप को व्यक्त करती है।

"स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि

आराधनाय लोकानां मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा"

अपनी आदर्शिता को राम ने समय आने पर पूरा कर दिखाया है। दुर्मुख द्वारा जानकी के विषय में जनापवाद की सूचना मिलते ही उन्होंने जानकी को त्याग देने का निश्चय कर लिया।

उस समय उनके मन को कितनी पीड़ा हुई होगी

इसका अनुमान लगाना कठिन है वे केवल इतना ही कह पाते हैं कि उनका जीवन शायद कष्ट उठाने के लिए ही है।
उनके मत में राजपद सुख का नहीं आपितु त्याग और तपस्या का है। राजा का वैयक्तिक सुख प्रजा की इच्छा पर निर्भर करता है।

सीता के प्रति उनके अटूट प्रेम का अनन्य उदाहरण सीता की हिरण्यमयी प्रतिमा का निर्माण कराना है। समर्थ होते हुए भी उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया। यज्ञ-कार्य में बाधा न आये। इसके लिए उन्होंने प्रतीक रूप में सोने की सीता बनवा ली है। उन्हीं के शब्दों में सीता उनकी अर्धांगिनी ही नहीं जीवन-सर्वस्व है।

इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिर्नयनयो
रसावस्या ! स्पर्शो वपुषि बहुलश्चन्दनरसः

राम में विनय-भावना भी कूट-कूट कर भरी हुई है आत्मप्रशंसा की भावना उनमें रचमात्र भी नहीं थी अप्रिय प्रसंगों को वे बड़ी चतुराई से टाल जाते हैं परशुराम मानमर्दन तथा कैकेयी द्वारा वनवास आदि के चिह्नों का दर्शन वे बड़ी चतुराई से टाल जाते हैं वासन्ती जब सीता-त्याग के लिए उन्हें उपालम्भ देती है तो उसे भी चुपचाप सह लेते हैं।

3

इनका हृदय जहाँ वज्र से भी कठोर है वहीं फूल से भी सुकुमार भी है, वासन्ती इनके हृदय का वर्णन इस प्रकार करती है।

"वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि
लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति"

संक्षेप में राम का चरित्र भवभूति ने एक आदर्श राजा, आदर्श पति एवं आदर्श भाई के रूप में ही अपने नाटक में चित्रित किया है। क्षमा, दया, औदार्य, गम्भीरता, विनयशीलता का सम्मिलित समुच्चय ही राम का चरित्र बन गया है।